Appendix

परिशिष्ट

संदर्भ एवं सहायक ग्रंथ-सूची

१. 'तरुण-काव्य ग्रन्थावली' : रामेश्वर लाल खण्डेलवाल 'तरुण', नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली.
२. 'प्रथम किरण' : रामेश्वर लाल खण्डेलवाल 'तरुण', विद्याभास्कर बुक डिपो, बनारस.
३. 'हिमांचला' : रामेश्वर लाल खण्डेलवाल 'तरुण', राष्ट्रीय साहित्य प्रकाशन परिषद, मेरठ.
४. 'आँधी और चाँदनी' : रामेश्वर लाल खण्डेलवाल 'तरुण', नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली.
५. 'हम शिल्पी संत्रास के' : रामेश्वर लाल खण्डेलवाल 'तरुण', नटराज पब्लिशिंग हाऊस, करनाल.
६. 'खूनी पुल पर से गुजरते हुए' : रामेश्वर लाल खण्डेलवाल 'तरुण', मगध प्रकाशन, नई दिल्ली.
७. 'यह लो मेरे हस्ताक्षर' : रामेश्वर लाल खण्डेलवाल 'तरुण', अमित कांति प्रकाशन, सोनीपत.
८. 'शिखर संगीत' : रामेश्वर लाल खण्डेलवाल 'तरुण'.
९. 'चल पड़े हम तो' : रामेश्वर लाल खण्डेलवाल 'तरुण', अमित कांति प्रकाशन, सोनीपत.
१०. 'सूरज डूबते की बदलियाँ' : रामेश्वर लाल खण्डेलवाल 'तरुण', अमित कांति प्रकाशन, दिल्ली.
११. 'मेरी आँखों की खिड़की से' : रामेश्वर लाल खण्डेलवाल 'तरुण', अमित कांति प्रकाशन, सोनीपत.
१२. 'आधुनिक हिन्दी कविता में प्रेम और सौन्दर्य' : रामेश्वर लाल खण्डेलवाल 'तरुण', नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली.
१३. 'आधुनिक हिन्दी कविता का विकास : सामाजिक-सांस्कृतिक सन्दर्भ में' : रामेश्वर लाल खण्डेलवाल 'तरुण', यतीन्द्र साहित्य सदन, भीलवाड़ा.
१४. 'सृजन, समीक्षा और शोध' : रामेश्वर लाल खण्डेलवाल 'तरुण', नीरज बुक सेन्टर, दिल्ली.
१५. 'तारे, ओसकण और चिनगारियाँ' : (सं.) जगदीश चन्द्र सिंहल, मगध प्रकाशन, नई दिल्ली.
१६. 'अग्नि-संगीत' : (सं.) डॉ. ओमानन्द रू. सारस्वत.
१७. 'अमित-स्मृति' : (सं.) डॉ. ओमानन्द रू. सारस्वत, अमित कांति प्रकाशन, सोनीपत.
१८. 'कविवर 'तरुण' : सर्जन के चरण' : (सं.) डॉ. ओमानन्द रू. सारस्वत, चिन्ता प्रकाशन, पिलानी.
१९. 'कवि 'तरुण' का काव्य : संवेदना और शिल्प' : डॉ. सन्तोष कुमार तिवारी, उन्मेष प्रकाशन, रोहतक.
२०. 'डॉ. 'तरुण' का गद्य साहित्य' : डॉ. राजपति, उन्मेष प्रकाशन, रोहतक.
२१. 'कवि 'तरुण' का काव्य संसार' : डॉ. हरिश्चन्द्र वर्मा, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली.
२२. 'कवि 'तरुण' : सर्जन के नये क्षितिज' : (सं.) डॉ. तपेश्वर नाथ, यतीन्द्र साहित्य सदन, भीलवाड़ा.
२३. 'अखण्ड काव्य यात्रा' : (सं.) डॉ. विष्णु शरण 'इन्दु', मेरठ.
२४. 'डॉ. 'तरुण' : दृष्टि और सृष्टि' : डॉ. शान्ति स्वरूप गुप्त, सूर्य प्रकाशन, दिल्ली.
२५. 'आधुनिक प्रतिनिधि कवि' : डॉ. शान्ति स्वरूप गुप्त, सूर्य प्रकाशन, दिल्ली.
२६. 'आधुनिक काव्य की स्वच्छन्दतावादी प्रवृत्तियाँ' : डॉ. अजबसिंह, विश्वविद्यालय प्रकाशन, नई दिल्ली.
२७. 'नया साहित्य : नये प्रश्न' : आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी, विद्यामंदिर, बनारस.
२८. 'कामायनी' : जयशंकर प्रसाद.
२९. 'उमर खैय्याम की रूबाइयाँ' : अनुवादक - डॉ. हरिवंशराय बच्चन.
३०. 'चिन्तामणि भाग-१' : आचार्य रामचन्द्र शुक्ल.
३१. 'नव हिमांचला' की परिचायिकी.
३२. 'आँधी और चाँदनी' की परिचायिकी.
३३. 'हम शिल्पी संत्रास के' की परिचायिकी.
३४. 'गीतात्मा कवि 'तरुण' : डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया.

SMT. HANSA MEHTA LIBRARY
M.S. University

महाराजा सयाजीराव विश्व विद्यालय, बड़ौदा
की पीएच.डी. उपाधि के लिए प्रस्तुत

शोध प्रबंध

''रामेश्वरलाल खण्डेलवाल 'तरुण' और उनका गीतकाव्य''

(की संक्षिप्त रुपरेखा)

P/Th.
10253

*

शोध छात्रा
अन्जू मंडावत

निर्देशक
डा. विष्णु चतुर्वेदी
रीडर, हिन्दी विभाग
म.स. विश्वविद्यालय, बड़ौदा

Dr. V. Chaturvedi
Deptt. of Hindi, Faculty of Arts
M. S. University BARODA.

महाराजा सयांजीराव विश्व विद्यालय, बड़ौदा

की पीएच.डी. उपाधि के लिए प्रस्तुत

शोध प्रबंध

''रामेश्वरलाल खण्डेलवाल 'तरुण' और उनका गीतकाव्य''

की संक्षिप्त रुपरेखा

शोध छात्रा

अन्जू मंडावत

निर्देशक

डा. विष्णु चतुर्वेदी

रीडर, हिन्दी विभाग

म.स. विश्वविद्यालय, बड़ौदा

(जुलाई - २००१)

विषयानुक्रमणिका

प्रथम अध्याय :	कवि तरुण का वैविध्यपूर्ण व्यक्तित्व, परिचय एवं परिवेश, वृत्ति एव प्रकृति, सतत विकसित साहित्य-व्यक्तित्व
द्वितीय अध्याय :	कवि तरुण और उनका गीत काव्य परिचयात्मक विश्लेषण।
तृतीय अध्याय :	राष्ट्र, चिंतन का राजनीतिक परिवेश, सामाजिक अवधारणा, कविता में सन्त्रास के स्तर, व्यक्ति और समष्टिजन्य पीड़ाएँ, आत्म सन्निहिति, गीतात्मक संवेदनाएँ।
चतुर्थ अध्याय :	मूल स्वर, जीवन्त आस्थाएँ, अंजेय स्वर, दृढ संकल्प धर्मिता।
पंचम् अध्याय :	राग, रस और प्रकृति।
षष्ठ अध्याय :	जीवन-दर्शन, आध्यात्म चिंतन।
सप्तम् अध्याय :	आधुनिक काव्य परम्परा और कवि 'तरुण'।
अष्टम् अध्याय :	शिल्प-पक्ष, कला विवेचना।
नवम् अध्याय :	उपसंहार, मूल्यांकन।

परिशिष्ट।

शोध प्रबंध की संक्षिप्त रूपरेखा

रामेश्वरलाल खण्डेलवाल आधुनिक युग के एक समर्थ गीत हस्ताक्षर थे, जिन्होंने बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध दोनों ही कालावधियों की काव्यधाराओं का प्रतिनिधित्व करते हुए अपनी विशिष्ट पहचान बनाई थी, प्रथम तो 'तरुण'जी एक अध्यापक थे, अध्यापकीय दायित्व के साथ उन्होंने अध्ययन की पुष्ट वैचारिकी को समृद्ध किया था और इस चिन्तन प्रक्रिया में उन्होंने आधुनिक युग के प्रतिनिधि कवियों को पढ़ा समझा था और उनसे अनुप्रेरित भी हुए थे। यही प्रेरणाभूमि उन्हें एक संवेदनशील समृद्ध कवि के रूप में प्रतिष्ठापित करती है।

गीत के प्रति तरुण का मोह प्रारंभ से रहा है। उन्होंने अपने उत्तरकाल में अछान्दस कविताओं का भी सृजन किया था किंतु उनका समर्थ रागात्मक स्वर गीतों के माध्यम से ही निस्सृत हुआ है।

गीत, मुक्तक, गजल, नवगीत, कविता आदि सभी काव्यशैलियों का उन्होंने प्रयोग किया। उनके गीत उनकी दैनंदिनी का एक हिस्सा थे, वे अपने इर्द-गिर्द कविता खोजते थे, उनके गीत उनकी अन्तरात्मा के भावलोक को प्रस्तुत करते हैं। इन गीतों में भारतेन्दु हरिश्चन्द जैसी वाक्विदग्धता है, जयशकर प्रसाद का काव्य ओज है, सुमित्रानन्दन पंत जैसी प्रवृत्ति का वैविध्यपूर्ण चित्रण है। निराला जैसी फक्कड़ता है और महादेवी जैसी संवेद्य परिकल्पना है।

प्रस्तुत शोध प्रबंध तरुणजी के समग्र गीतकाव्य को विश्लेषित करता है तथा शोधकर्ता के गीत रुझान को भी स्पष्ट करता है। मैंने तरुणजी के समग्र गीतिकाव्य को आत्मस्थ होकर पढ़ा है तथा तटस्थ होकर उसे

विवेचित किया है।

राजकमल प्रकाशन से 'तरुण ग्रंथावली' प्रकाशित हुई हैं, जिसमें तरुणजी के अधिकाश गीतिकाव्य को सम्पादित किया गया है। 'तरुण ग्रंथावली' ने समग्र हिन्दी साहित्य में एक हलचल-सी पैदा कर दी, वरिष्ठतम समालोचकों, काव्यरसिकों एवं साहित्यकारों का ध्यान आकर्षित हुआ, उनके रससिक्त गीतों की मदरिम झंकारों ने रसिकहृदयों को मदमस्त कर दिया।

तरुणजी अपने गीतों के सन्दर्भ में कहते हैं कि -

सूखने पाये नहीं रस प्रान का।
इसलिए मैंने चुना पथ गान का॥

यह आत्मस्थ कवि स्वयं से साक्षात्कार के यत्न में ही गीतों की मंदाकिनी प्रवाहित करता रहा है, यथा -

एक बार बस ऐसा गालूँ,
अपने में अपने को पालूँ।

कवि अटूट आस्था से जुड़ा जीवन की कटु अनुभूतियों से जब रु-ब-रु होता है, तब कहता है -

सौ बार मरण की छाँह घनी,
मुझ पर से यूँ होकर निकली
ज्यों चन्दा से काली बदली॥

इसी तरह कवि कहता है -

मैं प्रलय की आँधियों में से निकलता चाँद, मेरा हास तो देखो,
कर न पाएगा कभी भी राहु मेरा ग्रास, यह विश्वास तो देखो॥

अपने हृदय के आर्तनाद को व्यक्त करता हुआ कवि चीत्कार करता है -

एक चूडी टूटती हो, हाय हो जाता अमंगल,
मेघ में बिजली कडकती, काँपता सम्पूर्ण जंगल।
भाग्य के लेखे लगाते, एक तारा टूटता तो,
अपशकुन ! श्रृंगारिणी के हाथ शीशा छूटता तो,
दीप की चिमनी चटकती, भय अंधेरे का सताता,
कौन सुनता स्फोट ? पर कोई हृदय यदि टूट जाता॥

कवि भविष्य की सौहार्दता एवं सम्पन्न निष्ठा के प्रति आस्थावान है वह उद्घोष करता है -

सब तोड लकीरे भौगोलिक,
मानव, निज ज्योति लिए मौलिक
स्वच्छन्द सितारों से झलमल
सहगान घटापर गाएँगे। युग आएँगे॥

विश्व बन्धुत्व की उदात्त भावात्मक वैचारिकी से सम्पृक्त कवि का विश्वास समस्त भौगोलिक सीमाओं का अतिक्रमण कर जाता है। कवि ईश्वरीय सत्ता से भी विद्रोह करके मानवीय आस्थाओं को महत्व देता है -

सोचा, बहुत रही ईश्वर की बपौती,
स्वीकार है अब हमें चुनौती,
विराट रत्नगर्धा वसुन्धरा पर बुद्धिसम्मत,
आदमी खोकर रहे अपनी पत ?
मानव के गौरव का सवाल है।
निपटारा हो न्याय संगत,
आज मैं ईश्वर से झगड़ आया।

कहने को बहुत कुछ है जो यथास्थान विवेचित किया जा रहा है, मुझे संतोष है कि मैंने ईमानदारी से तटस्थ भावी होकर कवि तरुण के गीतों को विश्लेषित किया है। इनकी काव्य कृतियों में उल्लेखनीय कृतियाँ इस प्रकार -

प्रथम किरण, धूपदीप, हिमांचला, आंधी और चांदिनी, अग्नि संगीत, हम शिल्पी संत्रास के, तरुण काव्य ग्रंथावली, खूँनी पुल पर से गुजरते हुए, चल पड़े हम तो, तारे, ओसकण और चिनगारियाँ।

इनके अतिरिक्त इन्होंने अनुवाद, ललितगद्य, शोध और समीक्षा, सम्पादन आदि विधाओं पर भी पर्याप्त लिखा है।

इनके सद्य प्रकाशित काव्य ग्रंथ है -

यह लो मेरे हस्ताक्षर, मेरी आँखों की खिड़की से, जलती अगरबत्ती, आदि।

अंग्रेजी, कन्नड़, गुजराती, राजस्थानी, ब्रजभाषा आदि में इन्होंने काव्यानुवाद किए हैं। अपने रौंतीस वर्षीय अध्यापन के गहन अनुभव से भी इन्होंने वैचारिक परिपक्वता तथा गंभीर विश्लेषण की ऊर्जा अर्जित की है।

एम.ए. करने के बाद मैं बड़ौदा में ही स्थायी रूप से बस गई थी, तभी मैंने महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय बड़ौदा के हिन्दी विभाग के वरिष्ठ विद्वान एवं प्रख्यात साहित्यकार डा. विष्णु विराट चतुर्वेदी से भेट की और उनसे इस विषय को लेकर पीएच.डी. करने की जिज्ञासा प्रगट की तथा अनुनय की कि वह इस शोधकार्य का निर्देशन करें। अपने व्यस्ततम कार्यक्रम से समय निकालकर आपने अपने गंभीर एव वैदुष्यपूर्ण निर्देशन से मेरा शोधकार्य सम्पन्न कराया। मैं श्रृद्धा के साथ अपने निर्देशक महोदय का आभार व्यक्त करती हूँ।

इसी शोधकार्य के अन्तर्गत मेरी भेट श्री तरुणजी से भी हुई किंतु मेरा दुर्भाग्य रहा कि उनका शीघ्र ही स्वर्गवास हो गया और उनसे साक्षात्कार का क्रम आगे नहीं बढ़ सका, मैं स्वर्गीय तरुणजी की पावन स्मृति से सम्पृक्त होकर उन्हें श्रृद्धांजली अर्पित करती हूँ।

हिन्दी विभाग के वरिष्ठ प्रोफेसर डा. अक्षयकुमार गोस्वामी, डा. पी.एन. झा, डा. प्रेमलता वाफना, डा. अनुराधा दलाल, डा. इन्दु शुक्ला आदि के प्रति भी मैं आभार प्रदर्शित करती हूँ जिन्होंने समय-समय पर मुझे उत्साहित करके उचित जानकारियाँ प्रदान कीं।

मैं अपने पति श्री मंडावत के प्रति आभार व्यक्त करके उन्हें औपचारिक बंधनों में बाँधकर उनका महत्वकम नहीं करूँगी किंतु यह तय है कि बिना उनके सहयोग और प्रोत्साहन के यह कार्य कभी भी संभव नहीं हो पाता। मेरी माँ का सहज स्नेह एवं उनका सहयोग में विस्मृत नहीं कर पाऊँगी। मेरे नन्हे से बेटे के लालन पालन का दायित्व उन्हीं का रहा, उन्होंने अपने दोहित्र को प्राणों से लगा कर मुझे आश्वस्त कर दिया और स्वतंत्र होकर इस शोधकार्य में जुट गई। मैं श्रृद्धा और आदर के साथ अपनी माँ को धन्यवाद देती हूँ।

अध्ययन की सुविधा के लिए प्रस्तुत शोध प्रबंध को निम्नलिखित अध्यायो में विभाजित किया गया है तथा समग्र शोधकार्य को अनुक्रम से वर्गीकृत कर दिया गया है, यथा -

प्रथम अध्याय मे कवि रामेश्वरलाल खण्डेलवाल तरुण के जीवन एवं उनके वैविध्यपूर्ण व्यक्तित्व के विषय में प्रकाश डाला गया है। इस अध्याय से उनके जीवन के महत्वपूर्ण पहलुओं की विवेचना करते हुए उनके जीवन की प्रमुख घटनाओं को व्याख्यायित किया गया है। जन्म, शिक्षा, दीक्षा, माता-पिता, वृति, व्यवसाय आदि के विषय में आधिकारिक जानकारियों के साथ उनके व्यक्तित्व की गरिमा को भी व्यक्त किया गया है। इसमें कवि का परिकर एवं परिवेश भी समाविष्ट रहा है तथा कवि की विशिष्ट प्रकृति का भी लेखा जोखा प्रस्तुत किया गया है। इसी अध्याय में कवि के सतत विकसित साहित्य व्यक्तित्व को भी उजागर करने की चेष्टा की गई है।

द्वितीय अध्याय में 'कवि तरुण और उनका गीत काव्य' शीर्षक के अन्तर्गत कवि की गीत-यात्रा के विभिन्न पडावों एवं उनके गीतों के भ्रमिक विकास को सुस्पष्ट करने का यत्न किया है। इसमें कवि तरुण के गीतों का विशद परिचय देते हुए उनके वर्ण्य एवं कथ्य पर सतही दृष्टि डाली गई है। गीत-विषय के प्रस्तार को भी स्पष्ट करने का यत्न किया गया है। इस गीत विश्लेषण में कवि के अनेक गीत-संग्रहो का विवरणात्मक विश्लेषण भी ध्यातव्य है जिसमे प्रथम किरण, धूपदीप, हिमांचला, आंधी और चाँदनी, अग्नि संगीत, हम शिल्पी सत्रास के, तरुणकाव्य ग्रंथावली, खूँनी पुलपर से गुजरते हुए, चल पडे हम तो, तारे, आसकण और चिनगारियाँ, यह तो मेरे हस्ताक्षर आदि सभी प्रतिनिधि गीत संग्रहो का परिचयात्मक विवरण प्रस्तुत किया गया है।

अध्याय तृतीय में तरुण के गीतों की तटस्थ समीक्षा प्रस्तुत की गई है, जिसमें उनके वैचारिक परिवेश, राष्ट्रीयता, राजनीतिक-निर्धारण, सामाजिक अवधारणा, उनके गीतों में संवेदना तथा संत्रास के स्वर विवेचित करते हुए व्यक्ति और समष्टि जन्य पीडाओं, उनकी आत्मसन्निहिति और गीतात्मक संवेद्य अनुभावों को भी स्पष्ट करने का यत्न किया गया है।

चतुर्थ अध्याय में कवि तरुण के गीतों के मुख्य स्वरों की अनुगूंज विवेचित की गई है, कवि की जीवन्त आस्थाएँ उनका अजेय उद्घोषित स्वर, उनकी दृढ संकल्प धर्मिता आदि को भी विश्लेषित किया गया है।

पंचम अध्याय में तरुण के गीतों की साजसज्जा, श्रृंगार, राग और रस के साथ गीतों की प्रकृति को भी विवेचित किया गया है। इस सन्दर्भ में कवि की रागात्मक वृत्ति की हठधर्मिता या उसकी छन्दप्रियता का भी विवेचित किया गया है।

षष्ठ अध्याय में कवि के गीतों में जीवन की अनंत आस्थाओं एवं दार्शनिक गम्भीर विचारों के अनुक्रम विश्लेषित करते हुए कवि के आध्यात्म्यं-चिन्तन की दिव्यधारा को इंगित करने की चेष्टा की गई है। इसमें कवि के धार्मिक एवं आध्यात्मिक विचारों को व्याख्यायित किया गया है।

सप्तम् अध्याय में आधुनिक काव्य परम्परा के परिप्रेक्ष्य में कवि की गीतात्मक उपलब्धि तथा उसके विशिष्ट प्रदान को स्पष्ट किया गया है इसमें कवि के गीतों की एक निश्चित पहचान को भी उभारने का यत्न किया गया है।

अष्टम अध्याय में गीतों के शिल्पपक्ष को विवेचित किया है जिसमें गीतों में सन्निहित राग एवं छन्दों की समन्विति एवं तुकों और लयों की संगति को व्याख्यायित किया गया है।

अन्तिम **अध्याय नौवां** उपसंहार का है, जिसमें कवि के समग्र गीत काव्य को मूल्यांकित करते हुए उनके विशिष्ट प्रदान एवं उनकी अहम् भूमिका को स्पष्ट करते हुए कवि के गीत व्यक्तित्व को विश्लेषित किया गया है।

ग्रन्थान्त में परिशिष्ट है, जिसमें संदर्भ ग्रंथों के विवरण तथा अन्य सूचनाएँ संग्रहीत की गई हैं।

इस प्रकार यह प्रबंध कवि रामेश्वरलाल खण्डेलवार 'तरुण' के समग्र गीत काव्य को प्रथम बार ही विवेचित एवं विश्लेषित कर रहा है। इसमें छायावादी काव्य परम्परा से नई कविता तथा आधुनिक कविता तक के विभिन्न पड़ावों की चर्चा करते हुए कवि तरुण की गीत ओजस्विता को विभिन्न आयामों के साथ प्रस्तुत किया गया है।

अन्त में इस शोधप्रबंध के गठन में जिन विद्वानों, अधिकारियों, परिजनों एवं आत्मीयों का परोक्ष या प्रत्यक्ष सहयोग प्राप्त हुआ है, मैं उन सभी के प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ।

– अन्जू मंडावत